भा.क.नि.
CCI
मिनी रत्न

सोमनाथ

G20
भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

छमाही हिन्दी पत्रिका अंक 2 : जनवरी 2023 - जून 2023



भारतीय कपास निगम लिमिटेड

THE COTTON CORPORATION OF INDIA LIMITED

(भारत सरकार का उपक्रम – वस्त्र मंत्रालय)

(GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING – MINISTRY OF TEXTILES)

शाखा कार्यालय/BRANCH OFFICE : राजकोट/RAJKOT





संरक्षक की कलम से .....

प्रिय साथियों ,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शाखा कार्यालय राजकोट अपनी पत्रिका सोमनाथ अंक 2 का प्रकाशन करने जा रहा है इस उपक्रम में जैसे प्रथम अंक के लिए आपने अपना सहयोग दिया वैसे ही आगे भी हमे आप सभी के सहयोग की अपेक्षा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे पत्रिकाओ की अहम भूमिका होती है। किसी भी संगठन के सर्वांगीण विकास के लिए भाषा के प्रति जागरूक होना आवश्यक है। भाषा सोच व समाज से जुड़ी है, इसलिए यह सरल या कठिन नहीं होती बल्कि शब्द परिचित या अपरिचित होते है। जितना ही बोले जाते है, उतना ही सहज हो जाते है। अतः यह हमारा संवैधानिक कर्तव्य है कि हमे कार्यालय मे राजभाषा के कार्यों को अधिक से अधिक बढ़ाना है। इस पत्रिका के माध्यम से निगम के अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच एक सेतु तैयार करना है जिससे उन्हें राजभाषा मे कार्य करने मे हो रही कठिनाइयों को दूर किया जा सके। सोमनाथ पत्रिका ने निगम के कर्मचारियों की प्रतिभाओं को मंच देने का बीड़ा उठाया है। मै इस सृजनशील प्रयास को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

स्वप्नील वि. दडमल

उप महा प्रबंधक

संपादकीय



प्रिय पाठकों,

भाषा हमारे विचारों की अभिव्यक्ति एवं संवाद का सबसे प्रभावशाली माध्यम होती है। हिन्दी भारत की संपर्क भाषा एवं संघ सरकार की राजभाषा है। भारत का कोई भी व्यक्ति इस विशाल देश में किसी भी समुदाय या प्रांत में जाये, तो हिन्दी के सहारे संवाद संप्रेषण कर सकता है। यही हिन्दी की सबसे बड़ी विशेषता है। हमारे प्रदेश में गुजराती, हिन्दी, मराठी, सिंधी एवं अँग्रेजी इन सारी भाषाओं का उपयोग करने वाले समुदाय यहाँ मिलजुल कर रहते हैं। इन सभी भाषाओं के बोलने वाले समुदाय को आपस में जोड़कर संवाद स्थापित करने में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका है। सोमनाथ जनवरी - जून 2023 का यह दूसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक को पाठकगण रुचिकर एवं उपयोगी पाएंगे। प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने मे अपनी अहम भूमिका अदा करेगी। इस अंक की प्रतिक्रिया और बहुमूल्य सुझाव हमारे लिए मूल्यवान एवं आशीष हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.....।

आर. सी. वर्मा

सहायक प्रबंधक (वित्त/लेखा)

अनुक्रमणिका

राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन 27.02.2023	4-5
हिन्दी कार्यशाला का आयोजन 29.03.2023	6-7
राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन 24.05.2023	8-9
हिन्दी कार्यशाला का आयोजन 23.06.2023	10
जीवन जादू की छाया (कविता)	11
साइकिल (कविता)	12
आज का किसान (कविता)	13
आदमी की औकात (कविता)	14
आपनत्व की भाषा “हिन्दी” (कविता)	15
कोंकण – महाराष्ट्र का स्वर्ग	16
संघर्ष (कविता)	17
भारत में कृषि रसायनों की खपत	18-19
कपास का उद्गम	20
ज़िंदगी का सफर	21
स्वर्ग और पृथ्वी	22-24
अग्निपथ (कविता)	25



राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 27.02.2023

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय में सोमवार दिनांक 27.02.2023 को शाम 03:00 बजे श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबन्धक महोदय की अध्यक्षता में "हिन्दी भाषा और राष्ट्रीय एकीकरण" इस विषय पर राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने "हिन्दी भाषा और राष्ट्रीय एकीकरण" के संबंध में बताया गया।

अध्यक्ष महोदय द्वारा बताया गया कि राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया के संदर्भ में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका की बात को आज समाजशास्त्री और भाषा वैज्ञानिक समान रूप से स्वीकार करने लगे हैं। यह बात इसलिए भी महत्व की है कि भाषा अगर एक ओर राष्ट्रीय एकीकरण का महत्वपूर्ण उपादान बन सकती है तो वहीं दूसरी ओर वह समाज में तनाव, द्वंद, विद्वेष और विघटन की प्रवृत्ति को भी जन्म दे सकती है। अतः यह आवश्यक है कि भाषा की इस दुहरी संभावना को हम सजग भाव से समझें और एक ऐसी भाषा नीति को अपनाएं जो देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में सहायक हो, हमारी बहुभाषिक यर्थाथता के अनुकूल हो और जो राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया में साधक हो। हमें तो उस दिन की मात्र प्रतीक्षा करनी चाहिए जब दक्षिण के अहिन्दी भाषी प्रदेश स्वतः हिन्दी की स्वीकृति की घोषणा कर दें। यह भी ध्यान देने की बात है कि भारत एक बहुभाषीय देश है। इसीलिए राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में इसकी भाषायी समस्या जटिल रूप में हमारे सामने उभरती है। प्रायः हम इन दोनों भाषा प्रकार्यों के अंतर को पकड़ नहीं पाते इसलिए यह आवश्यक है कि हम संक्षेप में बहुभाषी देशों के संदर्भ में राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर विचार कर लें।



इस अवसर पर श्रीमती प्राजक्ता वि. गोल्हार, सहायक प्रबन्धक (विप) द्वारा अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि 1963 में एक राजभाषा अधिनियम पारित किया। इस राजभाषा अधिनियम की धारा 3 के अनुसार उन सभी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी के प्रयोग की बात कही गई जिनमें वह प्रयुक्त होती आई थी। चार वर्ष बाद सन् 1967 में राजभाषा (संशोधन) अधिनियम पारित हुआ। इस संशोधित अधिनियम के अनुसार यह छूट दी गई कि सरकारी

कर्मचारी हिन्दी या अंग्रेजी में काम कर सकता है। जो क्षेत्र द्विभाषिकता के लिए अनिवार्य माने गये (जिनमें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के प्रयोग को अनिवार्य माना गया है) वे हैं।

(क) संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना, तथा प्रेस विज्ञप्ति
(ख) संसदीय रिपोर्ट तथा सरकारी कागज पत्र और
(ग) संविदा, करारनामा, लाइसेंस, परमिट, निविदा सूचना आदि।

श्रीमती ज्योति त्रिवेदी, कनिष्ठ सहायक (सा.) संगोष्ठी का संचालन करते हुए अपने विचार व्यक्त किए जिसमें उनके द्वारा बताया गया कि राजभाषा संशोधन अधिनियम ने हिन्दी-अंग्रेजी द्विभाषिक स्थिति की ही पुष्टि की है। इस अधिनियम ने यह भी निर्धारित किया है कि केंद्र सरकार के जितने भी कार्यालय व मंत्रालय हैं वे आपस में हिन्दी भाषा में पत्राचार कर सकते हैं लेकिन उनके अंग्रेजी का अनुवाद तब तक संलग्न कर भेजा जाए जब तक संबद्ध मंत्रालय या कार्यालय के अधिकारी हिन्दी की व्यावहारिक दक्षता प्राप्त नहीं कर लेते।

अंत में श्री दीपक अग्रवाल, व. प्रबन्धक (वित्त) द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

***



हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 29.03.2023

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय राजकोट में दिनांक 29.03.2023 को श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबन्धक महोदय की अध्यक्षता में "स्वच्छ जीवन की पहली सीढ़ी स्वच्छता" इस विषय पर एकदिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने उक्त के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए।

सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय द्वारा बताया गया कि पांच वर्ष पूर्व शुरू हुए स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत देश भर में लगभग 12 करोड़ शौचालयों के निर्माण की बात हो या देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ जल पहुंचाने की मुहिम हो या फिर नागरिक समाज द्वारा लोगों को स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता करने की सार्थक पहल हो, सभी के संयुक्त प्रयास से स्वच्छता की दिशा में एक बड़ी मुहिम चलाने में भारत सफल रहा है। जरूरत इस बात की है कि भारत के सभी लोग इस अभियान का और विस्तार देने के लिए आगे आएं और स्वच्छता अभियान को मजबूती प्रदान करें।



विगत पांच वर्षों में स्वच्छता को लेकर देश में जनमानस का मन बहुत ही सकारात्मक हुआ है। कूड़ा कहीं भी फेंकते समय हाथ खुद-ब-खुद रुकने लगे हैं। घर के छोटे-छोटे बच्चों ने भी स्वच्छता के संदेश को अंगीकार किया है। ऐसा कई बार देखने को मिला है कि घर के छोटे बच्चे बड़ों को 'स्वच्छता' का पाठ पढ़ा रहे हैं। इधर-उधर कचरा फेंकने पर टोकते हुए दिख जाते हैं।

यह एक सकारात्मक बदलाव का प्रतीक है। इस बदलाव को और तेजी से आगे बढ़ाने की जरूरत है। इस दिशा में सरकार के साथ-साथ आम जन की जितनी भागीदारी होगी, यह अभियान उतना ही मजबूत होगा। साथ ही, देश के स्वास्थ्य पर बीमारियों का बोझ भी कम होगा। किसी भी राष्ट्र के विकास को मापने का उत्तम मानक वहाँ का स्वस्थ समाज होता है। नागरिकों के स्वास्थ्य का सीधा असर उनकी कार्यशक्ति पर पड़ता है। नागरिक कार्यशक्ति का सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय उत्पादन शक्ति से है। जिस देश की उत्पादन शक्ति मजबूत है, वह वैश्विक-स्तर पर विकास के नए-नए मानक गढ़ने में सफल होता रहा है। इस सन्दर्भ में स्पष्ट है कि किसी भी राष्ट्र के विकास में वहाँ के नागरिक स्वास्थ्य का बेहतर होना बहुत ही जरूरी है। शायद यही कारण है कि अमेरिका जैसे वैभवशाली राष्ट्र की राजनीतिक हलचल में भी स्वास्थ्य को अहम स्थान प्राप्त है। दरअसल किसी भी राष्ट्र के लिए अपने नागरिकों की स्वास्थ्य की रक्षा करना पहला धर्म होता है।

इस अवसर पर श्रीमती प्राजक्ता वि. गोल्हार, सहायक प्रबन्धक (विप) द्वारा इसी विषय को जारी रखते हुए "स्वास्थ्य और स्वच्छता में सम्बन्ध" के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। जिसमे उन्होने बताया कि ठीक से देखें तो कई ऐसे बीमारियां हैं जिनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध साफ-सफाई की आदतों से है। मलेरिया, डेंगू, डायरिया और टीबी जैसी बीमारियां इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। यह सर्वविदित है कि साफ-सफाई मानव स्वास्थ्य पर सीधा असर डालती है।

जिन बीमारियों के मामले ज्यादातर सामने आते हैं और जिनसे ज्यादा मौतें होती हैं, अगर उनके आंकड़ों पर गौर करें तो कहा जा सकता है कि शरीर की तथा परिवेश की वह अचूक मांग है जिसके माध्यम से न सिर्फ स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है बल्कि बीमारियों से लड़ने पर देश भर में हो रहा अरबों का सालाना खर्च भी बचाया जा सकता है।



स्वस्थ शरीर में निवसित स्वस्थ मस्तिष्क की उत्पादकता, बढ़ने से देश की उत्पादकता जो बढ़ेगी, सो अलग। इतना ही नहीं, शरीर के स्वस्थ रहने के लिए हर स्तर पर स्वच्छता आवश्यक है और इस तथ्य को हमारे महापुरुषों ने भी लगातार स्वीकारा है।



जिस महात्मा गांधी के जन्म दिवस पर स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया गया, वहीं महात्मा स्वास्थ्य का नियम बताते हुए कहते है, 'मनुष्य जाति के लिए साधारणतः स्वास्थ्य का पहला नियम यह है कि मन चंगा तो शरीर भी चंगा है। निरोग शरीर में निर्विकार मन का वास होता है, यह एक स्वयंसिद्ध सत्य है। मन और शरीर के बीच अटूट सम्बन्ध है।

अगर हमारा मन निर्विकार यानी निरोग हों, तो वे हर तरफ से हिंसा से मुक्त हो जाए, फिर हमारे हाथों तंदुरुस्ती के नियमों का सहज भाव से पालन होने लगे और किसी तरह की खास कोशिश के बिना ही हमारा शरीर तंदुरुस्त रहने लगे।

इस कार्यशाला का संचालन श्रीमती ज्योति त्रिवेदी, कनिष्ठ सहायक (सा.) ने किया और आभार ज्ञापन श्री दीपक अग्रवाल, वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त) द्वारा किया गया।

***

राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 24.05.2023

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय में बुधवार दिनांक 24.05.2023 को शाम 04:00 बजे श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबन्धक महोदय की अध्यक्षता में **"कार्यालय में सामूहिक कार्य का लाभ"** विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने "कार्यालय में सामूहिक कार्य का लाभ" के संबंध में संबोधित किया ।



अध्यक्ष महोदय द्वारा बताया गया कि कार्यस्थल पर सामूहिक कार्य या किसी सामाजिक कारण से संबंधित किसी अन्य कार्य के लिए या समुदाय के लिए कुछ पूर्वनिर्धारित लक्ष्यों की उपलब्धि की दिशा में बहुत कुछ प्रदान करता है। सामूहिक कार्य कर्मचारियों या व्यक्तियों को एक दूसरे से अधिक परिचित होने की क्षमता प्रदान करता है और सीखाता है कि कैसे एक साथ काम करना है और कुछ सामान्य लक्ष्यों की पूर्ति के लिए एक दूसरे की मदद करना है।

सामूहिक कार्य एक ऐसी चीज है जिसे उच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए और निरंतर ध्यान दिया जाना चाहिए। समूह के प्रत्येक खिलाड़ी को अपनी जिम्मेदारी को समझने की जरूरत है और यह महसूस करने की जरूरत है कि अगर वे सफल होना चाहते हैं तो उनके लिए एक साथ सुचारू रूप से काम करना कितना महत्वपूर्ण है। प्रत्येक खिलाड़ी को पूरी टीम के लिए समर्पित होना चाहिए और निस्वार्थ रूप से कार्य करने के लिए तैयार रहना चाहिए। कार्यालय के कार्य की सफलता और प्रत्येक कर्मचारी के विकास के लिए ऐसे कई तरीके हैं जिनमें सामूहिक कार्य महत्वपूर्ण है। सामूहिक कार्य को प्रोत्साहित करने और उसकी सराहना करने के लिए सबसे पहले सामूहिक कार्य से जुड़े फायदों को समझना बहुत जरूरी है। सामूहिक कार्य के कुछ लाभ निम्न प्रकार हैं, जैसे कि सहयोग, समस्याएं सुलझाना, संचार, भरोसा, लागत बचत आदि संदर्भ में विस्तृत जानकारी अध्यक्ष महोदय द्वारा प्रस्तुत की गई।

इस अवसर पर श्री दीपक अग्रवाल, वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त/लेखा) द्वारा सामूहिक कार्य की जरूरत पर विचार व्यक्त करते हुए बताया कि एक अहम सवाल जो हर किसी के मन में उठता है कि आखिर सामूहिक कार्य की जरूरत क्या है? हमें अपने संगठन में इसकी आवश्यकता क्यों है? इन प्रश्नों के उत्तर को दो या तीन पंक्तियों या पृष्ठों में सीमित नहीं किया जा सकता, सामूहिक कार्य से जुड़ी इतनी बातें हैं कि यह पूरा लेख बहुत छोटा लगेगा।



सामूहिक कार्य से जुड़ी बहुत सारी ज़रूरतें हैं जो कुछ सामूहिक कार्य परियोजनाओं को चुनने वाले अधिकांश संगठनों की ओर ले जाती हैं। सामूहिक कार्य को संगठन के हित में कर्मचारियों के बीच बेहतर आउटपुट और बॉन्डिंग से जोड़ा जा सकता है। सामूहिक कार्य से जुड़े ये कई तथ्य हैं जो अधिकांश संगठनों को इसे हरी झंडी दिखाने की ओर ले जाते हैं, इनमें से कुछ हैं :-

- किसी व्यक्ति द्वारा किए जाने की तुलना में एक टीम द्वारा कार्य तेजी से पूरे किए जाते हैं।
- त्रुटि की संभावना काफी कम हो जाती है क्योंकि एक से अधिक व्यक्ति शामिल होते हैं इसलिए एक या दूसरे को त्रुटि होने पर नोटिस किया जाता है और समय पर कार्रवाई की जाती है।
- व्यक्तिगत कर्मचारियों के बीच नकारात्मक प्रतिस्पर्धा की तुलना में टीम के सदस्यों के बीच हमेशा एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होती है जो अक्सर अपने समकक्षों के प्रदर्शन में बाधा उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं।
- टीमवर्क कर्मचारियों के बीच संबंधों को बेहतर बनाता है।
- जब भी किसी को मदद की जरूरत हो तो टीम के सदस्य एक दूसरे की मदद कर सकते हैं।
- टीमवर्क में कभी भी काम नहीं होता है, भले ही कोई दिखाई देने में विफल हो।
- अकेले काम करने से सीखने का मौका नहीं मिलता।

इस राजभाषा संगोष्ठी का संचालन श्रीमती ज्योति त्रिवेदी, कनिष्ठ सहायक (सा.) ने किया तथा आभार ज्ञापन सुश्री पूजा ए., सहायक प्रबन्धक (विपणन) द्वारा किया गया।



***

हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 23.06.2023

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय में दिनांक 23.06.2023 को सहायक प्रबन्धक (वित्त/लेखा) महोदय की अध्यक्षता में "हिंदी भाषा की विकास यात्रा" इस विषय पर एकदिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने उक्त के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए।



सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय द्वारा बताया गया कि एक भाषा के रूप में अगर हिंदी भाषा की विकास यात्रा की बात करें तो यह एक लंबी और सतत प्रक्रिया है। एक भाषा के विकास में उस समाज और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है जहाँ पर ये बोली जाती है। हिंदी भाषा के विकास में भी समाज और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है; खासकर उत्तर भारतीय राज्यों की भूमिका।

भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत रही है और इसी भाषा के विभिन्न काल खंडों में अलग-अलग स्वरूपों में हुए वियोजन से हिंदी का विकास हुआ है।

संस्कृत भाषा से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से अवहट्ट, अवहट्ट से पुरानी हिंदी और पुरानी हिंदी से आधुनिक हिंदी का विकास हुआ है जिसे आज हम बोलते है। हालांकि इसे लेकर मतभेद है कि अपभ्रंश से हिंदी का विकास हुआ है या पुरानी हिंदी से। मगर वर्तमान भाषाविज्ञानी इसे अपभ्रंश से ही विकसित हुआ मानते है। अगर हिंदी भाषा के विकास के कालखंड की बात करें तो यह तीन कालों में विकसित हुई- पहला कालखंड 1100 ईस्वी - 1350 ईस्वी का माना जाता है, इसे प्राचीन हिंदी का काल कहा जाता है। दूसरा कालखंड मध्य काल (1350 ईस्वी - 1850 ईस्वी) कहा जाता है। इस काल में हिंदी भाषा की बोलियों अवधी और ब्रज में विपुल साहित्य रचा गया। तीसरा कालखंड 1850 ईस्वी से अब तक माना जाता है और इसे आधुनिक काल की संज्ञा दी जाती है। इस काल में हिंदी भाषा का स्वरूप बेहद तेजी से बदला है।



दरअसल इस काल में हिंदी जन-जन की भाषा बन गई। ये वो दौर था जब आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी और इस दौरान हिंदी का संपर्क भाषा के रूप में प्रचलन खूब बढ़ा। ये हिंदी भाषा का ही असर था कि उत्तर भारत ही नहीं दक्षिण भारत से भी आने वाले आजादी के नायकों ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार किये जाने की पुरजोर वकालत की हालांकि हिंदी भाषा को आज तक राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल सका है।

इस कार्यशाला का संचालन श्रीमती ज्योति त्रिवेदी, कनिष्ठ सहायक (सा) ने किया तथा आभार ज्ञापन सुश्री पूजा ए., सहायक प्रबन्धक (विप) द्वारा किया गया।

जीवन जादू की छाया

मैं एक चीज़ चाहती थी, दूसरी मिल गई,

फिर मैंने कुछ देखा, अब एक और है।

मेरे पास एक अकथनीय शब्द है, लेकिन ऐसे एक सौ विचार हैं जिन्हें कहा जाना ज़रूरी है।

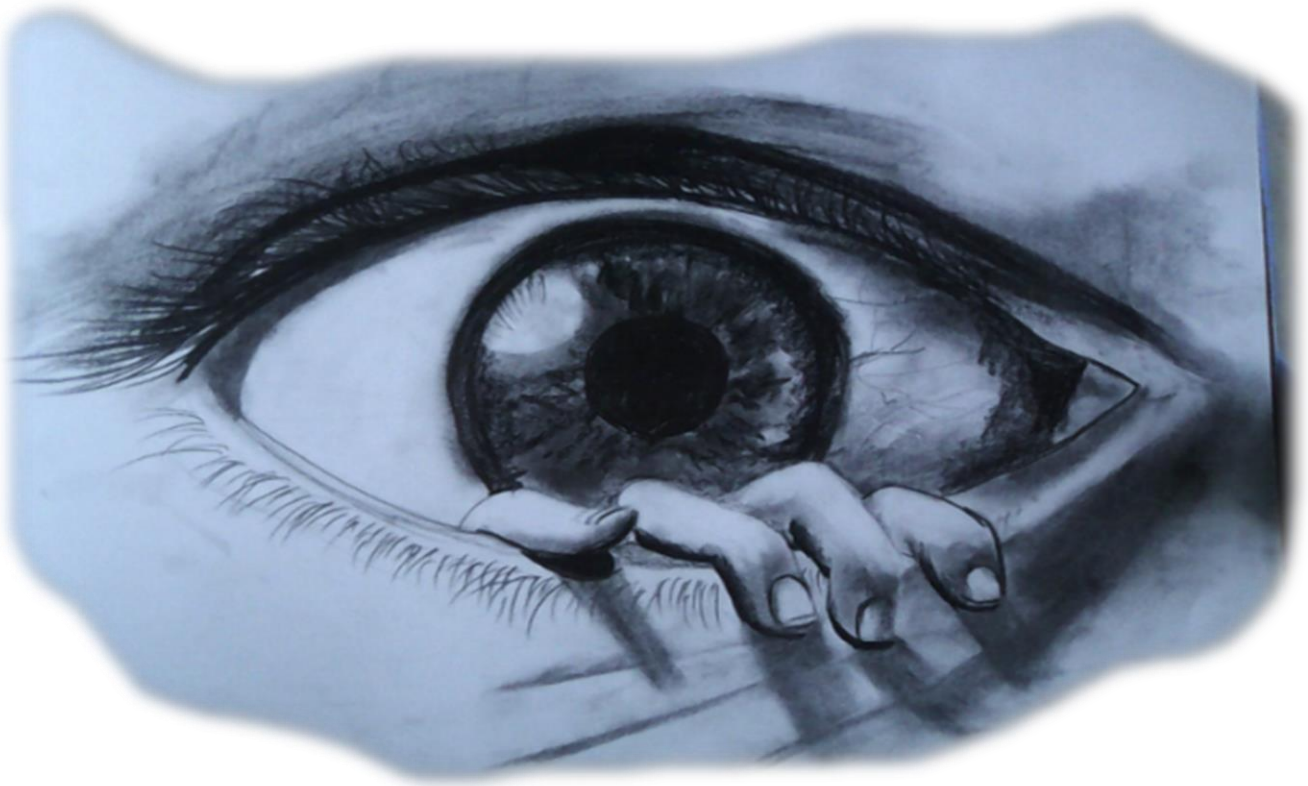
संसार के भ्रम में जो कुछ भी होता है वह अद्भुत है, न होना कल्पना बन जाता है।

हालाँकि दुनिया एक ही है, दुनिया के अंदर के लोग अलग-अलग हैं।

मन तो एक ही है लेकिन भावनाएँ अलग-अलग हैं।

हम प्रौढ़ता से तंग आ गए,

वापस नहीं जा सकते, आगे बढ़ना नहीं चाहते।



पूजा ए.
सहा. प्रबंधक (विपणन)

***

"साइकिल"

जीवन का फलसफा सीखने लिए,

चल कर गिरना और गिर कर उठने के लिए,

संतुलन की परिभाषा समझने के लिए,

वो जोश और जुनून देखने के लिए,

अपनी मंजिल पर जाने के लिए,

कभी मित्रों से दौड़ लगाने के लिए,

हर वक्त हमारा हौसला बढ़ाने के लिए,

पापा मुझे कुछ सीखने के लिए,

मेरी पहली साइकिल मुझको दिला लाये।



जयदीपसिंह विहोल
वरिष्ठ वाणिज्यिक अधिकारी

***

"आज का किसान"

वो किसान है,देश की शान है भूख का समाधान हैं,
फ़िर फसल उसकी उजड़ी है खेत क्यों विरान है..?
फ़सल उगाता है, मेहनत भी जी जान से करता है,
फ़िर क्यो सबको खिला कर, खुद भूख से मरता है...
मरता जा रहा वो कर्ज मे डूबता जा रहा है,
दाम नहीं मिल रहा, फ़सलो के साथ कटता जा रहा..
बेटी की शादी करना है, पिछला कर्ज भी चुकाना है,
एक जख्म अभी मिला है, एक जख्म पुराना है...
किसान का समाधान हो गया तो, लडने के सारे मुद्दे खत्म हो जाएगें,
यार फ़िर जो लोग हार चुके हैं वो सरकार कैसे बनाएगे...
पिताजी ने कहा, बेटा रुक जा कलम रोक दे,
जो दुनिया को बोलने वाला हैं, वो बात मुझे बोल दे...
वेसे भी ये दुनिया तेरी बात सुनने वाली नहीं है,
क्योंकि बातों मे तेरी सच्चाई है इनमे कोई गाली नहीं है...
वो खुद के सामने गिड़गिड़ा रहा, कैसी ये पुकार है,
गुंगी है, बहरी है, या अंधी ये सरकार हैं...
हम दुनिया की विसंगतियों में उस अन्नदाता को भूल रहे हैं,
जो दुनिया के ग्रन्थो मे लिखी है वो गाथायें भूल रहे हैं...
आज उसके लिए सारे सरकारी दरवाजे बंद हैं,
फ़िर भी उसके हौसले देखो कितने बुलन्द है...
सियासत अपना काम कर रही,लोग बढ़ रहे भीड़ की ओर,
फ़िर भी वो कांधे पर हल रख कर निकल पडा है खेत की ओर।



दीपक भटानिया
महेश बिरला (भतीजा)
वरिष्ठ वाणिज्यिक अधिकारी

***

"आदमी की औकात"

फिर घमंड कैसा, घी का एक लोटा,
लकड़ियों का ढेर, कुछ मिनटों में राख,
बस इतनी-सी है, आदमी की औकात।

एक बूढ़ा बाप शाम को मर गया, अपनी सारी ज़िन्दगी,
परिवार के नाम कर गया, कहीं रोने की सुगबुगाहट,
तो कहीं ये फुसफुसाहट....अरे जल्दी ले चलो
कौन रखेगा सारी रात,
बस इतनी-सी है आदमी की औकात।

मरने के बाद नीचे देखा तो नज़ारे नज़र आ रहे थे,
मेरी मौत पे.....कुछ लोग ज़बरदस्त, तो कुछ ज़बरदस्ती रोए जा रहे थे,
नहीं रहा.....चला गया.....दो चार दिन करेंगे बात.....
बस इतनी-सी है आदमी की औकात।

बेटा अच्छी सी तस्वीर बनवायेगा, उसके सामने अगरबत्ती जलायेगा,
खुशबूदार फूलों की माला होगी, अखबार में अश्रुपूरित श्रद्धांजलि होगी,
बाद में कोई उस तस्वीर के, जाले भी नही करेगा साफ़,
बस इतनी-सी है आदमी की औकात।

जिन्दगी भर, मेरा- मेरा- किया,
अपने लिए कम, अपनों के लिए ज्यादा जिया
फिर भी कोई न देगा साथ जाना है खाली हाथ,
क्या तिनका ले जाने के लायक भी, होंगे हमारे हाथ ?
बस यही है हमारी औकात।

जाने कौन सी शोहरत पर, आदमी को नाज है।
जो आखरी सफर के लिए भी, औरों का मोहताज है।
फिर घमंड कैसा ? बस इतनी सी हैं हमारी औकात।



संजय राठी
वरिष्ठ सहायक (सा.)

***

अपनत्व की भाषा "हिन्दी"

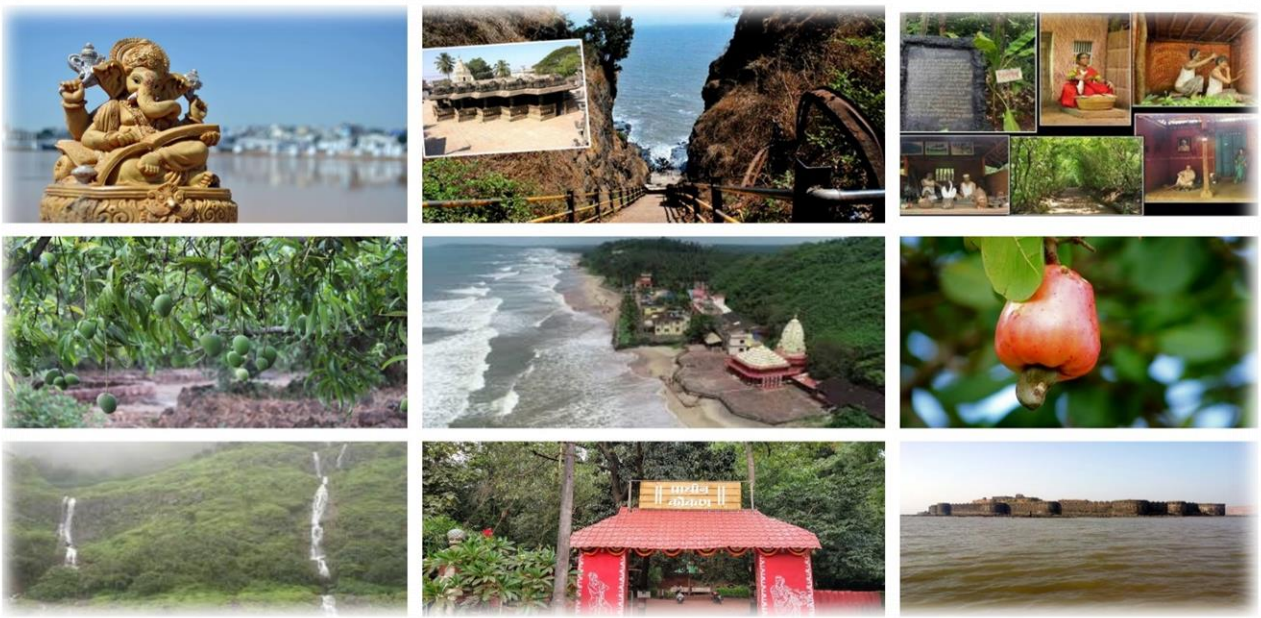
हिन्दी बेटी है संस्कृत की, उतनी ही समृद्ध और महान।
हिन्दी देती भारत भर को वाणी का नया आयाम।
हिन्दी किन्तु रही अपनों से सदा उपेक्षित ही दिखती।
है समृद्ध फिर भी जाने क्यों विदेश शब्दों से है सजती।
शायद माँ जैसी स्नेहमयी है सबको अंग लगाती ,
अंग्रेजी-उर्दू जुबान को बड़े प्रेम से अपनाती।
फिर भी हमको प्यारी माँ जैसी, हम इसके है बालक।
इसके आँचल में उन्नति है, यह हम सबकी है पालक।



अमित उपाध्याय
सहायक वाणिज्यिक कार्यकारी

***

कोंकण – महाराष्ट्र का स्वर्ग।



जैसे कश्मीर को भारत का स्वर्ग कहा जाता है वैसे ही कोंकण जो महाराष्ट्र का एक प्रदेश है, उसे महाराष्ट्र की स्वर्गभूमि कहा जाता है। यह माना जाता है कि इस प्रदेश का निर्माण भगवान परशुराम ने किया था, इस वजह से कोंकण को "परशुरामभूमि " के नाम से भी जाना जाता है।

मुंबई यह महाराष्ट्र की राजधानी होने के साथ-साथ कोंकण की प्रादेशिक राजधानी भी है। मुख्य भाषा कोंकणी होने के साथ यहा पर मराठी एवं मालवनी भाषा भी बोली जाती है। कोंकण प्रसिध्द है वहाँ के पर्यटन स्थलों, समुद्र किनारें, धार्मिक स्थलों के लिए देशभर से पर्यावरणस्नेही यहा छुट्टियाँ बिताने आते है।

कोंकण में समुद्र किनारें पर्यटकों में आकर्षण का केन्द्र बिन्दु होते है। प्रसिध्द समुद्र किनारें में गणपतिपुले, अलीबाग, हर्णे, हरीहरेश्वर, वेंगुर्ले, तारकर्ली, मुरुड, काशीद, नागाँव यह सबसे प्रमुख है। गणपतिपुले के समुद्र किनारें पर गणेशजी का पुरातन मंदिर है जहाँ श्रद्धालुओं की काफी भीड़ होती है। यहा समुंदर में वॉटरबाईक, स्कुबा डाइविंग जैसे साहसी खेलों की सुविधाएँ उपलब्ध है। गणेश मंदिर से थोड़ी दूरी पर "प्राचीन कोंकण" यह जगह है, जहाँ कोंकण का प्राचीनकालीन जीवनमान हरिहरेश्वर के समुद्र किनारें पर महादेवजी का पुरातन मंदिर है। इन किनारों पर पर्यटकों को रहने के लिए रिज़ॉर्ट बनाए गए है जो रहने के साथ- साथ खाने का भी इंतजाम करते है। वेंगुर्ले से समुंदर में 10 किलोमीटर पर वेंगुर्ले रॉक्स नामक छोटा टापू है, जहा जाने के लिए निवती समुद्र किनारें से नाव मिल जाती है। कोंकण के लोगों के लिए पर्यटन यह सबसे प्रमुख कमाई का साधन है। इसके अलावा वे चावल की खेती एवं मत्स्यपालन भी करते है। यहा के आम दुनियाभर में प्रसिध्द है जिसमें हापुस को सबसे ज्यादा जाना जाता है। कोंकण के वेंगुर्ले में काजू की खेती होती है। यहा सुपारी,नारियल,काली मिर्च, जायफल,दालचीनी का उत्पादन भी होता है।

कोंकणी लोग गणेशोत्सव काफी धूमधाम से मनाते है। गाँवों में गणेश चतुर्थी से लेकर गणेश विसर्जन तक हर दिन अलग-अलग सांस्कृतिक कार्यक्रम होते है जिसमें सभी गाँववासी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते है। ऐसे भगवान परशुराम के चरणों से पावन धरती की खूबसूरती बनाकर रखना वहा जानेवाले यात्रियों की ज़िम्मेदारी बनती है।

आकाश सुरडकर
कनिष्ठ सहायक (लेखा)

***

संघर्ष...

लहरों का शोर नहीं, सागर की गहराई का 'शान्त' सुनो,
कुछ बड़ा करना है जीवन में, तो एकान्त चुनो,

मुश्किलों, उदासियों, इंतज़ार, बेचैनी सबका अंत भी आएगा ,
पतझड़ को जब अपनाया है तो एक रोज़ बसंत भी आएगा…

ईश्वर का गुणगान करो, जीवन को आसान करो,
क्यो ठहरा है ऐ मुसाफिर, सफर की शुरुआत करो,
लहरों की गिनती क्या करना, तैर कर दरिया पार करो।

लहरों का शोर नहीं, सागर की गहराई का 'शान्त' सुनो



ज्योति त्रिवेदी
कनिष्ठ सहायक (सा)

***

"भारत में कृषि रसायनों की खपत"



कृषि रसायन (Agrochemicals) :- रासायनिक उर्वरक (Fertilizer)और कीटनाशक (Pesticides) कृषि रसायन होते है

उर्वरक :-प्राकृतिक या कृत्रिम पदार्थ जिसमें रासायनिक तत्व होते हैं जो पौधों की वृद्धि और उत्पादकता में सुधार करते हैं।

किटकनाशक :- वे रासायनिक यौगिक होते हैं जिनका उपयोग कीड़े, कृंतक, कवक और अवांछित पौधों (खरपतवार) सहित कीटों को मारने के लिए किया जाता है। भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा कृषि रसायन उत्पादक है। NCRB Report 2021 अनुसार भारत में कीटनाशकों/कीटनाशकों के आकस्मिक सेवन से लगभग 8000 घटनाएँ हुई, जिसके परिणामस्वरूप 7800 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।

कृषि-रसायनों के दुष्प्रभाव:- उर्वरक कृषि रसायनों के अति उपयोग से मृदा के अम्लीकरण की स्थिति बन सकती है, इस प्रकार मृदा में जैविक पदार्थ (ह्यूमस सामग्री) की मात्रा कम हो जाती है जिससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है और यहाँ तक कि इससे वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन की स्थिति बनती है।

- कीटनाशक, मृदा, हवा, पानी सतह तथा भूजलद्ध संदूषक करते है|
- बायो-विविधता की हानि: कृषि-रसायनों के अधिक उपयोग से पृथ्वी की बायो-विविधता पर नकारात्मक प्रभाव हो रहा है।
- कीटनाशकों और हर्बिसाइडों के उपयोग से पैदावार के साथ-साथ वनस्पति, पशुओं और कीटों की संख्या में असंतुलन पैदा हो रहा है, जो प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है।
- लाभदायक कीट जैसे केचुए ,मधुमक्खी एवं डाइक्लोफेनाक नामक पशु चिकित्सा दवा के कारण गिद्ध विलुप्त होने के कगार पर है।

कृषि रसायन के विकल्प :-

जैविक खेती: जैविक खेती मिट्टी को पोषण देने के लिए प्राकृतिक उर्वरकों जैसे खाद, पशु खाद और कवर फसलों पर निर्भर करता है।

जैविक कीट नियंत्रण: इस दृष्टिकोण में कीटों की आबादी को नियंत्रित करने के लिए उनके प्राकृतिक शत्रुओं का उपयोग करना शामिल है। लाभकारी कीड़े, जैसे लेडीबग, लेसविंग और परजीवी ततैया, हानिकारक कीटों का शिकार करने या उन्हें परजीवी बनाने के लिए लाए जाते हैं।



फसल चक्र और विविधीकरण: विभिन्न प्रकार की फसलें क्रम से लगाने से कीटों और बीमारियों के जीवन चक्र को तोड़ने में मदद मिलती है। विभिन्न फसलों की पोषक तत्वों की आवश्यकताएं अलग-अलग होती हैं, जो मिट्टी से विशिष्ट पोषक तत्वों की कमी को रोकती है। इसके अतिरिक्त, अंतरफसल, जहां विभिन्न फसलें एक साथ उगाई जाती हैं, प्राकृतिक कीट नियंत्रण प्रदान कर सकती हैं और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार कर सकती हैं।

जैव कीटनाशक: जैव कीटनाशक प्राकृतिक सामग्रियों जैसे पौधों, बैक्टीरिया, कवक या खनिजों से प्राप्त होते हैं। वे मनुष्यों, लाभकारी जीवों और पर्यावरण के लिए न्यूनतम जोखिम पैदा करते हुए विशिष्ट कीटों को लक्षित कर सकते हैं। जैव कीटनाशकों को अक्सर पारंपरिक रासायनिक कीटनाशकों का अधिक पर्यावरण अनुकूल विकल्प माना जाता है। अप्रैल 2021 में, श्रीलंकाई सरकार ने नागरिकों को 'गैर विषैले भोजन' के अधिकार की गारंटी देने के उद्देश्य से जैविक कृषि के लिए राष्ट्रव्यापी परिवर्तन और कृषि रसायन आयात पर प्रतिबंध लगा दिया ,जिससे सभी फसल की उत्पादकता 10-20% गिर गई | मिट्टी को chemical Free करने के लिये खेत मे 3-4 साल तक जैविक खेती करनी पड़ती है शुरुआत मे 1-2 साल तक उत्पादकता गिरती है | भारत मे 86% किसानों के पास 2 hect. से कम जोत भूमि है,अतः जैविक खेती को धीरे -धीरे अपना पड़ेगा |



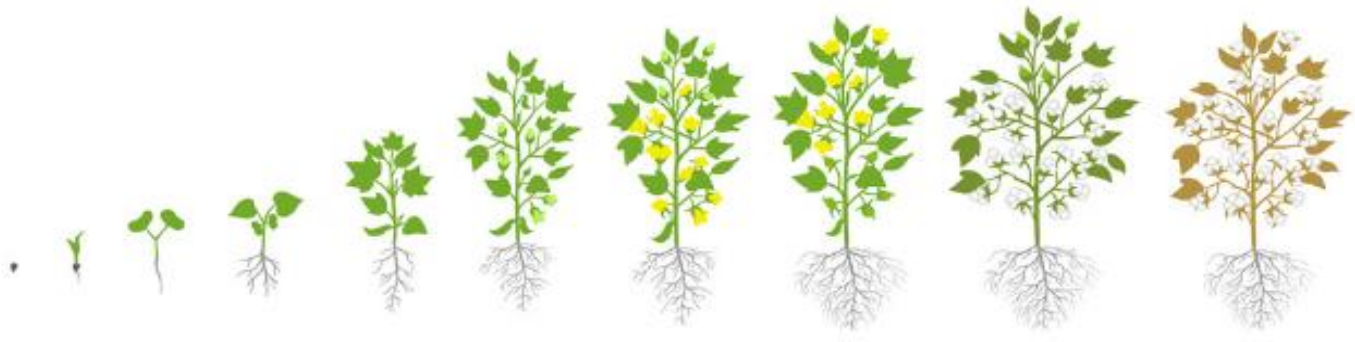
अंकित कुर्मी
कनिष्ट सहायक (सा)

***

कपास की उत्पत्ति



- कपास एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक रेशा और नकदी फसल है जिसे सफ़ेद सोना भी कहा जाता है।
- कपास का उत्पत्ति स्थान हमारा प्यारा देश भारत है।
- भारत मे कपास की खेती लगभग 2300 ई.पू. से हो रही है।
- भारत में सर्वप्रथम संकर कपास की खोज 1970 में डॉ सी. टी. पटेल द्वारा सूरत (गुजरात) में की गयी थी।
- भारत में सर्वप्रथम रंगीन कपास की खोज मध्यप्रदेश के खंडवा जिले के कृषि महाविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक डॉ के. सी. मंडलोई द्वारा 1995 में की गयी थी।
- कपास की अनेक प्रजातियाँ होती है और भारत विश्व का एक मात्र ऐसा देश है अनेकों प्रजातियों की खेती होती है हालाकि भारत में अमेरिकन कपास (गोसीपियम हिर्सुटम) की खेती सबसे अधिक होती है।
- भारत में कपास की खरीदी के लिए भारत सरकार द्वारा भारतीय कपास निगम लिमिटेड यानि सीसीआई की स्थापना की गयी, सीसीआई हमेशा किसानो के लिए एक दोस्त के रूप में रहा है, जिसने कपास की खरीदी के साथ-साथ किसानो के लिए मौसम की स्थिति, फसल की स्थिति और सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों पर आधारित नवीनतम समाचार प्रदान करने के लिए "कॉट-एली" नामक एक मोबाइल एप्लिकेशन विकसित किया है।



जयदीप चौहान
कनिष्ठ सहायक (सा)

***

जिंदगी का सफर

जिसे निभा ना सकूँ ,
ऐसा वादा नहीं करता....

मै बातें अपनी औकात से,
ज्यादा नहीं करता...

भले ही तमन्ना रखता हूँ
आसमान छू लेने का लेकिन,
औरों को गिराने का,
इरादा नहीं रखता...



विकास कुमार मेघवंशी
कनिष्ठ सहायक (सा)

***

जीवनरंग

यह जिंदगी हँसते खेलते जीने के लिए है,
चिंता, भय, शोक, क्रोध, निराशा, वासना पीने के लिए है।
संतोषी जीवन आशा है अभिलाषा है,
उतार चढ़ाव इस जीवन की परिभाषा है।
जीवन जीव कर्म से गोता खाता है,
जीव अपने कर्म से जीवन को खो जाता है,
नीच कर्म ही जीव के जीवन का तिनका बन जाता है।
मस्तक पर स्वर्ण किरीट सजा जीवन रंक बनाता है,
उद्देश जन्म का नहीं कीर्ति या धन का है।
सुख नहीं, धर्म भी नहीं, न तो दर्शन है।
विज्ञान, ज्ञान बल नहीं, न तो चिंतन है।
जीवन का अंतिम ध्यय स्वयं जीवन है।ये



शैलेंद्र कुमार पाटीदार
सहायक वाणिज्यिक कार्यकारी

***

स्वर्ग और पृथ्वी (कहानी)

कल्पना ने आश्चर्य में भरकर वातायन के दोनों पट खोल दिए। सामने अनंत की सीमा को स्पर्श करता हुआ विशाल सागर लहरा रहा था। तट पर बिखरी हुई उषा की हलकी गुलाबी आभा से चाँदनी की चंचल लहरें टकराकर लौट रही थीं। प्रशांत नीरवता में केवल चाँदनी की लहरों का मंद-मर्मर गंभीर स्वर नि:श्वासें भर रहा था।

फिर यह स्वर कैसा ? कल्पना विस्मय से स्तब्ध थी। यह कल्पना का पहला अनुभव था। चाँदनी के सागर के तट पर, स्वर्ग के एक उजाड़ कोने में हलके सुनहरे बादलों का एक प्रासाद था। शैशव से ही कल्पना उसमें निवास करती थी; पर वह स्वर्ग में रहते हुए भी स्वर्ग से अलग थी : वह एकांत पर विश्वास करती थी। उसके प्रासाद के चारों ओर का वातावरण इतना रहस्यमय और दुर्भेद्य था कि क्रीड़ारत चंचल देवकुमार भी उधर जाने का साहस न करते थे। कल्पना अपने सूनेपन की रानी थी। नीली आभावाले वातायन-पटों को खोलकर वह न जाने कब तक निहारा करती थी सामने फैले हुए चाँदनी के अनंत सागर को, उसमें लहराती हुई चंचल लहरों को। कभी-कभी स्वर्ग के घाटों पर देवियाँ मंगल कामना से प्रेरित होकर बहा देती थीं कुछ जलदीप, जो लहरों पर उठते-गिरते, जलते-बुझते उसके वातायन के सम्मुख से बह जाते थे और उन्हें देखते ही वह भयभीत होकर पट बंद कर लेती थी। चंचल लहरों का मंद स्वर हलके-हलके झकोरों के साथ थपकियाँ देता था। जल पक्षियों का मधुर सुकोमल संगीत उसे लोरी सुनाता था और वह पलकें मूँदकर सो जाती थी किंतु आज का सहसा गूँज उठनेवाला यह स्वर विचित्र था। उसने कल्पना की कि यदि इस सागर का तट उषा की हलकी गुलाबी आभा से न निर्मित होकर प्रखर धूप के काँपते हुए पीलेपन से बना होता और चाँदी की रेशमी लहरें कहीं उससे आकर टकराती तो जितना करुण क्रंदन उस वातावरण में छा जाता, कुछ वैसी ही करुणा इस स्वर में भी है, पर इस स्वर का उद्गम कहाँ से है ? इस स्वर की लहर-लहर जैसे भिगो रही थी कल्पना के मन को एक आर्द्र उदासी से। वह वातायन से टिककर बैठ गई। उसकी आँखें शून्य गति से ढूँढ़ने लगीं - चाँदनी के अनंत विस्तार में उस अनंत रहस्य भरे गायक को स्वर लहराता रहा। वह उसमें खो गई। धीरे-धीरे कुछ चंचल आँसू उसके नयनों से झाँकने लगे। सखियाँ उद्विग्न हो उठीं। "कुमारी!" उन्होंने व्याकुल होकर पुकारा। कुमारी की तंद्रा भंग हुई। उसने चौंककर उदासी से पूछा, "यह कैसा स्वर है, वेदना?" वेदना बोली, "जाने भी दो, कल्पना ! आज क्या तारों के हार न गूँथोगी ?" कल्पना बोली, "वेदना, मेरे प्रश्न का उत्तर दो। तारों के हार तो नित्य हूँ, सखी ! दुष्ट तारे कुम्हलाते भी तो नहीं। देखो न, असंख्य हार पड़े हैं। आज न जाने क्यों मन करता है कि कोई ऐसा होता, जिसके चरणों में इन हारों को समर्पित कर पाती। जाने दो इन हारों की वेदना। यह स्वर कैसा है?" वेदना ने उत्तर न दिया। "बोलो, वेदना ! मेरे मन की उत्सुकता विकल हो रही है। ऐसा स्वर तो पहले कभी नहीं सुना था।" वेदना ने देखा अन्य सखियों की ओर और वे एक विचित्र आशंका से भर गईं। वेदना किसी प्रकार प्रयत्न कर बोली, "यह स्वर ! यह कुछ नहीं रानी ! एक देवकुमार निर्वासित कर दिया गया है स्वर्ग से। वही संभवत: गाता हुआ इस ओर आ निकला है।" "देवकुमार! कल्पना के देश की नीरवता और एकांत को भंग करने का साहस उसे कैसे हुआ ?" कल्पना ने किंचित् रुष्ट होकर पूछा।

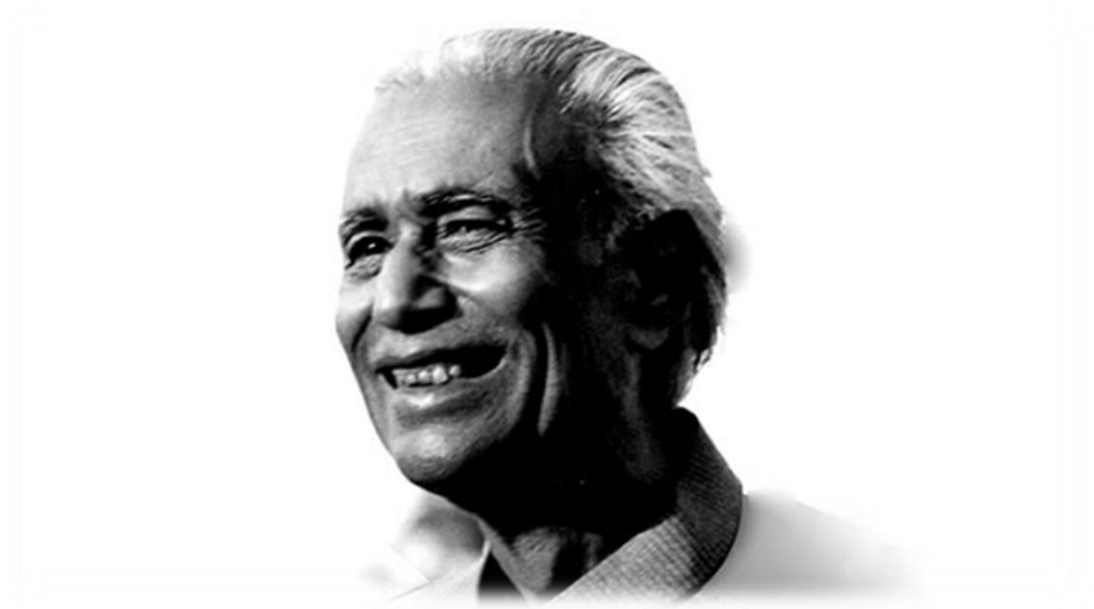
"वह ऐसा ही दु: साहसी है, कुमारी ! स्वर्ग के निषिद्ध स्थानों में उसने प्रवेश किया, तारों के फूलों में उसने अपना सौरभ भर दिया। अपने गीतों में उसने किरणों के तीर चलाने प्रारंभ किए। इसी से तो देवराज ने उसे निर्वासन का दंड दे दिया। किंतु विश्वास करो, कुमारी ! उसके मस्तक पर चिंता की रेखा भी न उभरी। कुछ ठिकाना है इस दु:साहस का ?" "स्वर्ग के नियमों का उल्लंघन! मेरे एकांत को सहसा भंग करने का साहस !" कल्पना क्रोध से काँप रही थी। एकाएक झकोरों के साथ गायक का तीव्र स्वर कक्ष में गूँज गया। कल्पना के मन का क्रोध जैसे एकाएक धुल गया हो; परंतु फिर भी प्रयत्न कर वह तीव्र स्वर में बोली, "बुलाओ उस उद्दंड देवकुमार को !" वेदना काँप गई, "नहीं-नहीं, कुमारी ! वह यों ही आया है, यों ही चला जाएगा।" कल्पना बोली, "मैं उसे दंड दूँगी, जाओ।" "मैं डरती हूँ, कुमारी ! उसका प्रवेश अमंगलकारी न सिद्ध हो। उसके स्वरों में इंद्रजाल की लहरें नाचती हैं। उसके नयनों में जादू की ज्योति चमचमाती है।" "कल्पना इतनी दुर्बल नहीं है। जाओ।" "तुमने यह दु:साहस क्यों किया, देवकुमार ?" देवकुमार कुछ सोच रहा था। "मेरे प्रश्न का उत्तर दो, दु:साहसी युवक!" "पर तुम्हारा प्रश्न क्या है ?" देवकुमार ने चौंककर पूछा। "इतनी उच्छृंखलता ! मैंने अभी तुमसे कुछ पूछा था।" कल्पना क्रोध से काँप गई।

"क्षमा करो, देवि! मेरा मन तुम्हारे स्वरों की मिठास में ही डूब गया था। अर्थों की ओर मैंने ध्यान ही न दिया।" देवकुमार किंचित्

मुस्कुराया "जिस प्रश्न की ध्वनि इतनी मीठी है, उसका तात्पर्य कितना मादक होगा ! फिर से प्रश्न पूछो, कुमारी । मन होता है, तुम सदा इसी प्रकार प्रश्न पूछती जाओ और मैं अनसुनी करता जाऊँ ।" सखियाँ अपने को वश में न रख सकीं, खिलखिलाकर हँस पड़ीं। रानी के मस्तक की रेखाएँ सुलझ गईं। गालों पर दो गुलाब चुपके से खिल गए । पर वह फिर सँभल गई । "यह दु:साहस और फिर भी यह वाचालता एक देवकुमार को शोभा नहीं देती ।" कल्पना के स्वर भी जैसे उखड़ रहे थे । "देवकुमार! अब मैं 'देवकुमार' नहीं हूँ, देवि । मेरी व्यक्तिगत संज्ञा 'प्रेम' है और प्रेम आसन को नहीं सह सकता, चाहे वह स्वर्ग का आसन ही क्यों न हो । देवराज ने अपने अधिकार को अक्षुण्ण रखने के लिए प्रेम को नियंत्रण में रखना चाहा और मैंने विद्रोह कर दिया । मुझे निर्वासन का दंड मिला । निराश्रित होकर चल पड़ा । सुना था, तुमने शैशव से ही अपने को स्वर्ग से दूर रखा है । सोचा था, तुम्हारे यहाँ आश्रय मिलेगा, पर तुम दंड दोगी । अच्छा है, दंड ही दो । तुम्हारा दंड भी कम सुखद न होगा, कुमारी !" हँस पड़ी कुमारी। कब तक बा कठोरता के आडंबर में मन के नवीन स्पंदन को ढाँककर रखती, "तो तुम आश्रय की इच्छा से आए हो ! कल्पना तुम्हें निराश न करेगी, प्रेम !" "वेदना, इनका प्रबंध करो ।" वेदना किसी भावी अमंगल की कल्पना से काँप उठी । "त्रदेवराज पधारे हैं, कुमारी!" "आने दो ।" मैंने कहा था, प्रेम का आगमन अमंगल से पूर्ण है ! वेदना ने सोचा । देवराज आए । नयनों में रोष था, गति में संयम । "कल्पना, तुमने एक विद्रोही को आश्रय दिया है । उसने निषिद्ध स्थानों में प्रवेश किया है - स्वर्ग का शासन भंग किया है ।" "निषिद्ध स्थान जैसे ?" "जैसे देवबालाओं के अज्ञान हृदय, मृगशावकों के भोले नयन और तरुणों की चंचल गति...।" कल्पना केवल किंचित् मुसकरा दी, "और कल्पना, उसने तुम्हारे वातावरण की नीरवता और एकांत को भी भंग किया है ।" "कल्पना इस नवीन परिवर्तन का स्वागत करती है। स्वर्ग के इस विभाजन और अन्याय्य शासन के विरोध में प्रेम ने समता और स्वतंत्रता की पुकार की है और कल्पना उससे सहानुभूति रखती है ।" क्या मेरा शासन अन्याय्य है? देवराज उत्तेजित हो उठे । "यह कहना मेरी अशिष्टता होगी और न कहना असत्य ।" कल्पना शांति से बोली । देवराज खीझ गए, "अच्छा, अभी तो प्रेम को केवल निर्वासन मिला था, कल प्रभात में उसे प्राणदंड दिया जाएगा । मैं जाता हूँ ।" कल्पना सिसक रही थी। वेदना रुँधे गले से बोली, "चुप रहो, कुमारी ! मैंने पहले ही कहा था, अनजान परदेसी से इतनी ममता बढ़ानी उचित नहीं है, कल्पना !" "वेदना !" कुमारी सिसकियाँ रोककर बोली, "कल्पना करो कि एक पक्षी, जो जन्म से निराधार अंतरिक्ष में उड़ रहा हो और दूर-दूर तक केवल शून्य ही उसके परों को सहारा दे रहा हो, गति दे रहा हो और चुपके-चुपके उसके परों में थकान भी भर रहा हो - यदि उस पक्षी के थके हुए परों को विश्राम के लिए किसी सुकोमल टहनी का आसरा मिल जाए और दूसरे ही क्षण प्रबल झंझावात झकझोरकर उस टहनी को तोड़ दे, तब वह पक्षी क्या करेगा ?" "उसका वश ही क्या है, कुमारी ! उसके थके हुए पर उड़ने में असमर्थ होंगे । उसी टहनी के साथ-साथ मुरझाए हुए फूल की भाँति वह पक्षी भी टूटकर गिर जाएगा, कुमारी !" वेदना ने निराश स्वर में कहा । "वेदना ! हाँ, ठीक है, वेदना !" कल्पना को जैसे कोई नई बात सूझ गई थी, "मेरी टहनी टूट जाएगी सखी, और मैं...मैं भी उसका साथ दूँगी ।" वेदना कुछ समझ न पाई । "प्रेम!" "हाँ, कुमारी !" "तुम्हें अपना भविष्य ज्ञात है न?" "ज्ञात है, रानी !" और प्रेम हँस पड़ा । "तुम हँस रहे हो, प्रेम ?" रानी के नयन भर आए । "तुम रो रही हो, छिह । उधर देखो कुमारी !" प्रेम ने चाँदनी के सागर की ओर संकेत किया । चाँदनी की लहरें प्रासाद से टकराकर लौट रही थीं । "मैं नहीं समझी, प्रेम !" "नहीं समझी ! देखो, युग-युगों से कितनी लहरें आकर प्रासाद के इन पत्थरों से टकराती हैं, पर प्रासाद के पत्थर अटल हैं । मुझे भी तुम एक नश्वर लहर समझना कुमारी, जो अनंत के किसी कोने से उमड़ी और टकराकर दूसरे ही क्षण लौट गई । ऐसी नश्वर लहरियों को पत्थर कभी भूलकर भी याद नहीं करते ।" "पत्थर! मैं पत्थरों की बात नहीं कर रही हूँ, प्रेम । उधर देखो, उसे भी समझने का प्रयत्न करो ।" प्रेम ने देखा । वेदना स्वर्ण-कलश में चाँदनी भरकर महल की ओर लौट रही थी । हलकी गुलाबी सिकता में उसके नन्हे-नन्हे पैरों के चिह्न बनते जाते थे । "देखा ! जो एक बार भी इसे कुचलकर चलता है, यह सिकता उसके चरण-चिह्नों को अपने हृदय में कितने स्नेह से अंकित कर लेती है, कुमार !" "ठीक है कुमारी; पर देखना, कल तक पवन के झकोरे और चाँदनी की लहरियाँ इसे समतल कर देंगी । यदि किसी पथिक की स्मृति के पद-चिह्न कहीं सिकता पर अंकित हो गए हों तो समय के झकोरे उन्हें समतल कर ही देंगे । इसमें शोक क्यों करती हो कुमारी ?" "मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ?" कल्पना बोली । पास के सरोवर के नीले जल में कमल खिल रहे थे । तारों के कुछ भौंरे मकरंद-पान कर रहे थे । रानी ने एक कमल तोड़ा और प्रेम के पास फेंक दिया। भ्रमर उड़ा नहीं, मकरंद से चिपटा रहा । "इसका क्या उत्तर है, प्रेम?" "इसका उत्तर! तुम संभवत: पूछ रही हो कि कमल के टूटने पर भी भ्रमर उड़ा नहीं; पर रानी, ये तुम्हारे तारों के कमल अमर हैं। यदि ये नश्वर होते और किसी नश्वर क्षण में इन पर छा जाता पीलापन, उड़ जाता इनका मकरंद तो

भ्रमर भी उड़कर दूसरे कमल पर जा बैठता। कमल सूखते रहते हैं रानी, भ्रमर सदा आश्रय ढूँढ़ लेते हैं। कल्पना निरुत्तर हो गई। प्रेम हँस पड़ा। "कितनी भोली हो तुम, कुमारी! उत्तर देना भी न आया। कहो, कल्पना का सौंदर्य वास्तविकता से अधिक स्थायी होता है। कहो।" "हाँ !" कल्पना को जैसे उत्तर मिल गया, "कल्पना का सौंदर्य वास्तविकता से अधिक स्थायी होता है। कुमार। प्रेम की लहरों से टकराने पर कल्पना के पत्थर टूट जाते हैं। कल्पना की सिकता पर प्रेम के पदचिह्न अमर होते हैं। प्रेम के कमल के सूखने पर कल्पना के भ्रमर उड़ नहीं जाते, वे उसी के साथ टूट जाते हैं, कुमार ! कल्पना को प्रेम ने नया जीवन दिया है और कल्पना मृत्यु में भी प्रेम का साथ देगी। "मृत्यु? प्रेम ने न शासन में जीवित रहना सीखा है और न प्राण देना। कल्पना की शाखाओं पर किरणों की रेशमी डोर में झूलने की अपेक्षा मैं उन्मुक्त आकाश की स्वतंत्र छाया में, चाँदनी की लहरों के साथ मृत्यु-क्रीड़ा करना अधिक उचित समझता हूँ। इन लहरों को चीरकर सागर के उस पार पहुँचना कितना सुखद होगा और यदि डूब भी गया तो यह संतोष होगा कि कल्पना रानी के सागर ने ही मुझे आश्रय दिया है और तब उस पार का आनंद मुझे मझधार में ही मिल जाएगा। किंतु तुम यहीं रहो, रानी! तुम्हारा सुख मेरे साहस की प्रेरणा होगा। "तुम मेरे आश्रित हो न ! मैं तुम्हारे साथ चलूँगी, तुम्हारी रक्षा में सन्नद्ध होकर। चाँदनी की लहरें कल्पना रानी का शासन मानती हैं। अपने कोमल स्पर्श से सहारा देकर वे तुम्हें ले चलेंगी उस पार। आओ। दोनों सागर की ओर बढ़े - सागर स्वागत के उल्लास में हिलोरें लेने लगा। कल्पना ने पैर बढ़ाए। सहसा प्रेम ने उसे पीछे खींच लिया और कहा, "ठहरो !" नीचे पृथ्वी पर - साँझ के गुलाबी बादलों में आँख-मिचौनी खेलते हुए विहगदल के रव को अनसुना करते हुए पेड़ों की काँपती छाया में चला जा रहा था एक पथिक अपने गेह को। रात घिर आई थी, बादल छा गए थे। एक घने वृक्ष के तले वह रुक गया आश्रय हेतु। हरे झुरमुट के पास, नगर के एक उच्च गृह के वातायन से झाँक रही थी एक बालिका। अँधेरा बढ़ रहा था, बादल छा रहे थे। पर उस समय पृथ्वी पर न प्रेम था, न कल्पना। बालिका के मन में वन-वन भटकनेवाले एक पथिक की याद तो आई, पर उसके मन में कोई पीड़ा न कसकी। उस समय पृथ्वी पर प्रेम न था। पथिक के मन में एक अनजान पीड़ा तो कसक गई, पर उसे कोई याद न आया। उस समय पृथ्वी पर कल्पना न थी। दोनों मूक थे। दोनों के अभाव घुटते रहे।

पद्मश्री धर्मवीर भारती

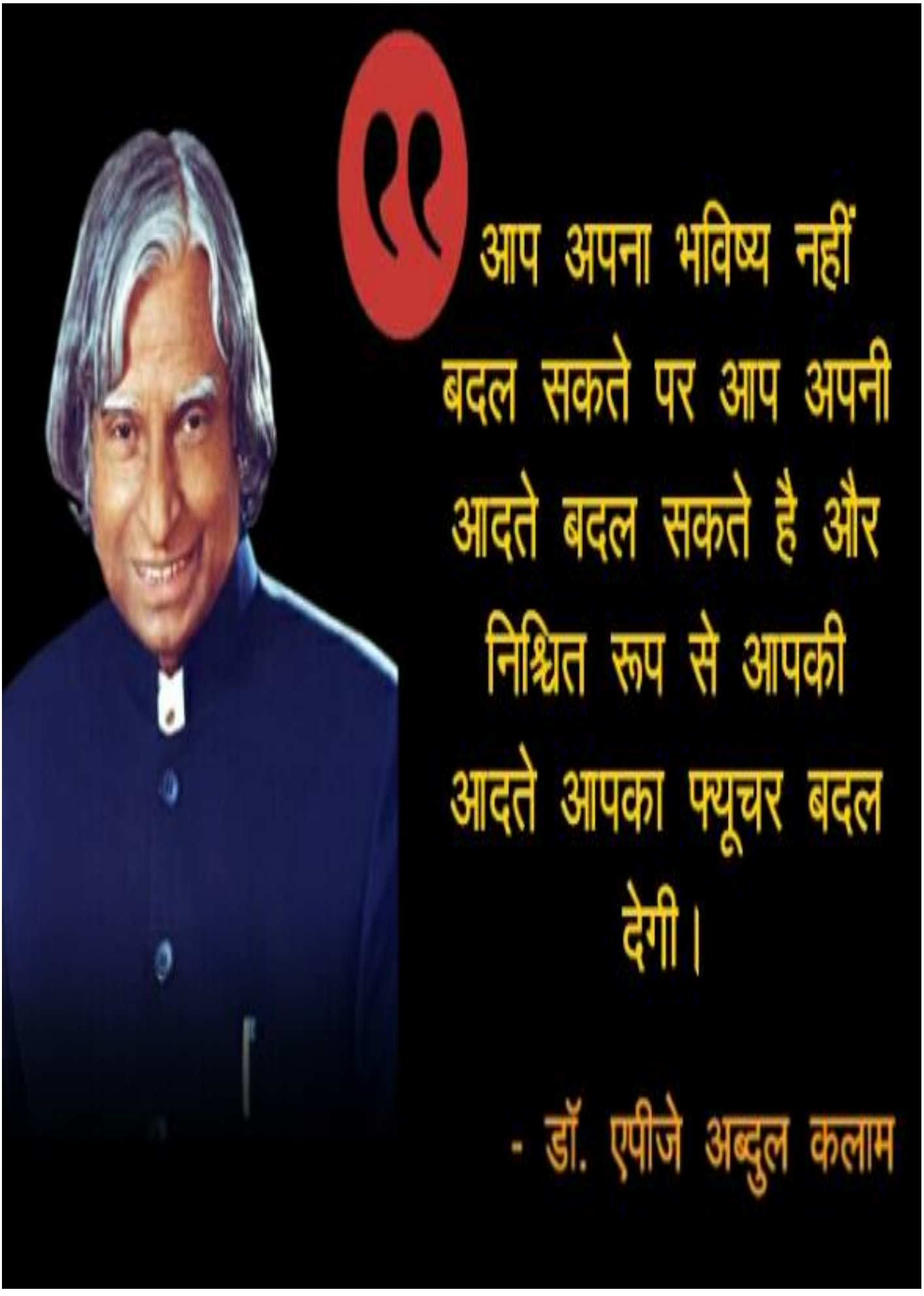


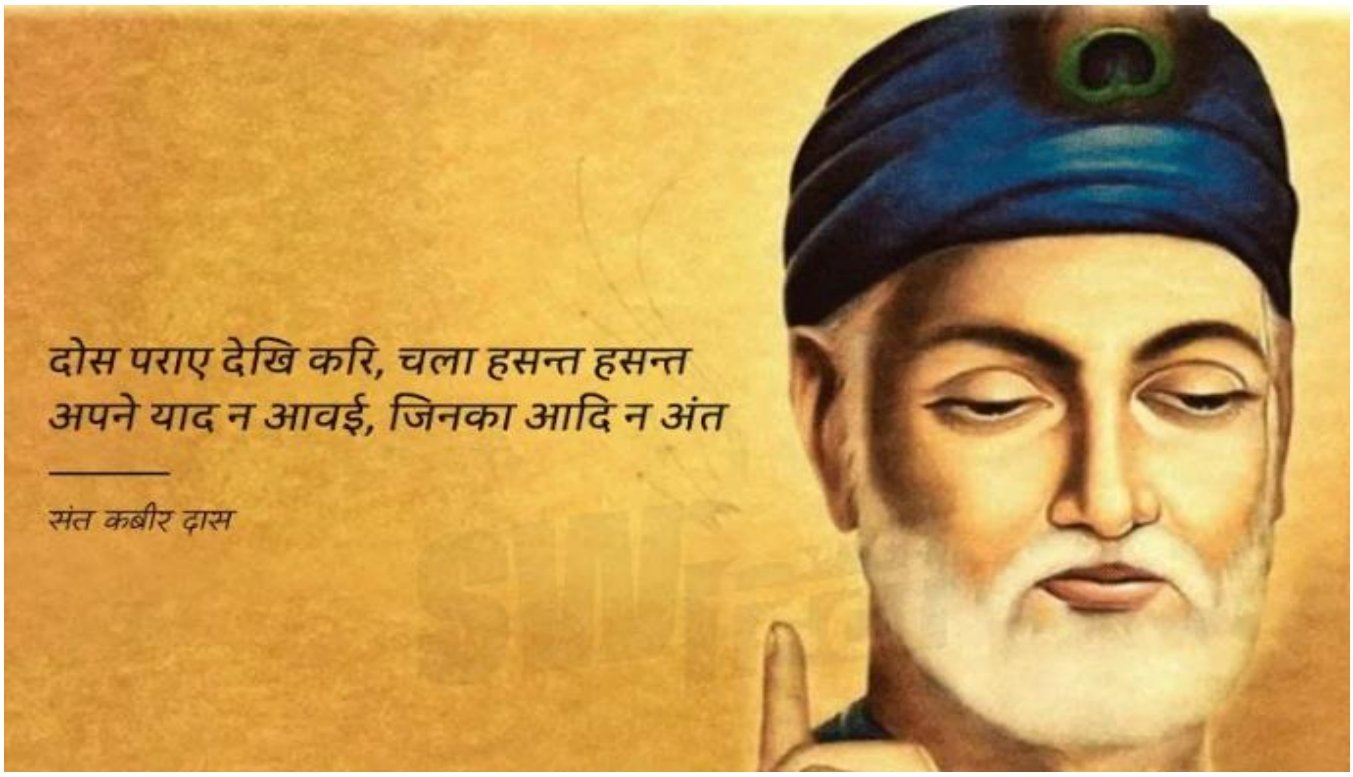
अग्निपथ...

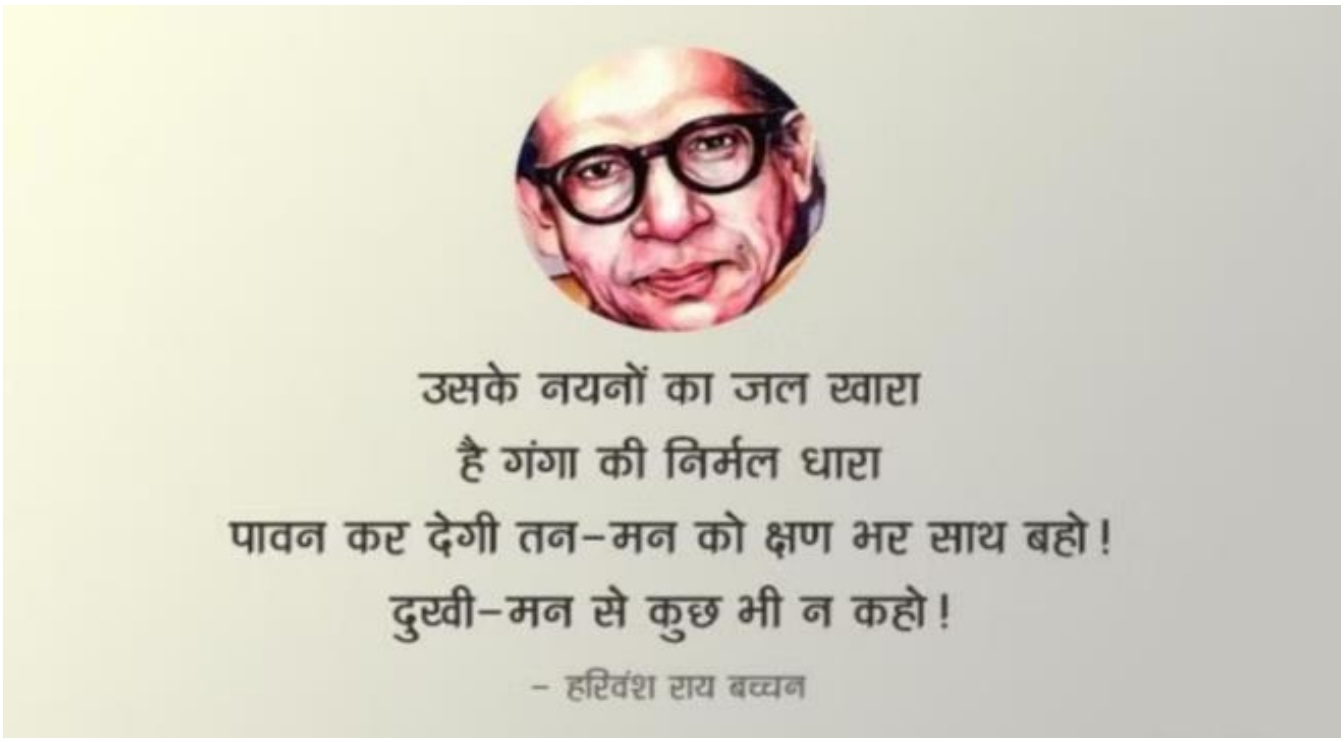
वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने हों बड़े,
एक पत्र छाँह भी,
माँग मत, माँग मत, माँग मत,
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।
तू न थकेगा कभी, तू न रुकेगा कभी,
तू न मुड़ेगा कभी,
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।
यह महान दृश्य है,
चल रहा मनुष्य है,
अश्रु श्वेत रक्त से,
लथपथ लथपथ लथपथ,
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।

हरिवंश राय बच्चन




आप अपना भविष्य नहीं
बदल सकते पर आप अपनी
आदते बदल सकते है और
निश्चित रूप से आपकी
आदते आपका फ्यूचर बदल
देगी।
- डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम





भारतीय कपास निगम लिमिटेड

THE COTTON CORPORATION OF INDIA LIMITED

(भारत सरकार का उपक्रम – वस्त्र मंत्रालय)

(GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING – MINISTRY OF TEXTILES)

शाखा कार्यालय/ BRANCH OFFICE : राजकोट/RAJKOT